श्री महावीर विधान

रचयिता

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत

मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री महावीर विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्रीविद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज का स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष 2023
संयोजक	:	बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना
संस्करण	:	तृतीय, 1100 प्रतियाँ
सहयोग राशि	:	30/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्रकाशक	:	विद्या सुव्रत संघ
प्राप्ति स्थान	:	१. बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना Mob.- 9425128817 २. अमर ग्रंथालय इंदौर, 9425478846 ३. अरिहंत जैन सागर, 8236060889
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बापू ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥

अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ 1॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ 2॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ 3॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ 4॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ 5॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ 6॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ 7॥

हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहंत फिर सिद्ध हम भी॥8॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥9॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(अवतार/लय–चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ्य चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री वृषभनाथ स्वामी अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (शंभु)

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥
अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।

ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य (शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य (आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य (सखी)

यह अर्घ्य चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥

जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ्य अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ्य चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सुव्रत दान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री महावीर विधान

जय बोलिये

वर्तमान शासन नायक,
भक्त हृदय के मूलनायक,
अन्तर-बाह्य उजाले,
दीपावली पर्व देने वाले,
वीरों के वीर, अतिवीर,
वर्धमान, सन्मति, महावीर !,
त्रिशला दुलारे, सिद्धार्थ के प्यारे,
सबकी आँखों के तारे,
पावापुर से मोक्ष पधारे
परमपूज्य
श्री महावीर भगवान् की जय॥

भजन

(लय : इक रोज तो चलना...)

प्रभु द्वार में आना है, बस सिर को झुकाना है।
प्रभुभक्ति और कुछ भी नहीं, निज को जिन से मिलाना है॥

उद्धार अगर चाहे, तू अपने चेतन का।
प्रभु वीरा को करले नमन, ये मौका है चंदन सा॥
प्रभु वीरा की ले ले शरण, नहीं और ठिकाना है।
प्रभु भक्ति और.....॥ 1॥

अपना हो समर्पण ऐसा, नहीं कोई तमन्ना हो।
यदि होवे तमन्ना तो, बस प्रभु सा ही बनना हो॥
तुमसे तुमको ही माँगा है, तुम से तुमको ही पाना है।
प्रभु भक्ति और.....॥ 2॥

नहीं कोई शिकायत है, नहीं कोई करेंगे गिला।
हमने ज्यादा तो माँगा नहीं, किंतु कम तो कभी न मिला।
हमने अर्पण तो कुछ न किया, लूटा तेरा खजाना है।
प्रभु भक्ति और.....॥ 3॥

हमने तेरी कभी न मानी, किंतु की अपनी मनमानी है।
कुंदन खोया कीचड़ पाने को, ऐसी अपनी कहानी है॥
वीरा 'सुव्रत' को हीरा करो, पीड़ा भव की मिटाना है।
प्रभु भक्ति और.....॥ 4॥

श्री महावीर विधान

स्थापना

जय महावीर-जय महावीर

शाससननायक-जय महावीर

(ज्ञानोदय)

जय बोलें हम महावीर की, इतना बस वरदान मिले।
महावीर से महा वीर का, बनने का बस ज्ञान मिले॥
''जियो और जीने दो'' सबको, समझ बूझकर अपनायें।
करें भक्ति से महा अर्चना, महावीर के गुण गायें॥

अष्ट द्रव्य की थाल सजायी,भक्ति भाव से खुशी-खुशी।
अगर न आये मन में प्रभु तो, अपनी होगी सुनो हँसी॥
अर्जि हमारी मर्जि तुम्हारी, अपनालो या ठुकरा दो।
आज नहीं तो कल जब चाहो, नाँव हमारी तिरवा दो॥

जय महावीर-जय महावीर

शाससननायक-जय महावीर

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(पुष्पांजलिं....)

यह दुनियाँ तो सूख रही पर, नयन हमारे बरस रहे।
दर्शन पूजन के प्यासे हैं, आकुल-व्याकुल तरस रहे॥
अर्पण यह जल मिले कृपा-जल, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं.....।

जल जलकर इतने जल बैठे, भस्मसात ज्यों जंगल हों।
मिला न कंचन खिला न उपवन, हरो ताप अब शीतल हों॥
अर्पण चंदन त्रिशलानंदन, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय संतारतापविनाशनाय चंदनं.....।

दर्शन और प्रदर्शन करके, हम भूले प्रभु की बतियाँ।
रागी बने, नहीं वैरागी, तभी भटकते भव-गतियाँ॥
पुंज चढ़ायें शिव पद पायें, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्.....।

ना माला ना बाग बगीचा, नहीं बनें हम गुलदस्ता।
बस छोटा सा पुष्प बनें हम, जो प्रभु के पद में वसता॥
पुष्प चढ़ायें काम नशायें, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं.....।

कभी नमक से कभी नीर से,कभी छका-छक भोगों से।
भूखे प्यासे मन बहलाया, किन्तु बचे ना रोगों से॥
क्षुधा मिटे नैवेद्य चढ़ायें, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....।

ना बनना सूरज ना चंदा, ना जुगनूँ ना ही बिजली।
बस छोटा सा दीप बनें जो, करे आरती भली-भली॥
मोह मिटाने दीप चढ़ायें, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं.....।

सम्यक् तप बिन राख हुये पर, कर्म झुलस भी ना पाये।
अब खुद को ही धूप बनाकर, कर्म जलाने हम आये॥
जगत्-भूप को धूप चढ़ायें, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

संकल्पों की धरती पर तो, लगें सफलता के फल ही।
हमें वही संकल्प दान दो, तुम्हें चढ़ायें हम फल भी॥
मिले मोक्ष फल, अर्पण ये फल,पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं.....।

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ायें सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

षष्ठी शुक्ल अषाढ़ को, तज अच्युत सुर धाम।
माँ त्रिशला के गर्भ में, आये वीर महान्॥

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

तेरस शुक्ला चैत्र को, जन्मे वीर जिनेश।
सिद्धारथ घर आँगने, उत्सव किये सुरेश॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अगहन दसवीं कृष्ण को, तजा मोह परिवार।
बने तपस्वी तप सजे, होती जय-जयकार॥

ॐ ह्रीं मगशिरकृष्णदशम्यां तपमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

दसें शुक्ल वैशाख को, पाया केवलज्ञान।
शासन नायक बन पुजे, महावीर भगवान्॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कार्तिक कृष्ण अमास को, हरे कर्मरज सर्व।
पावापुर से मोक्ष जा, दिये दिवाली पर्व॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्ण-अमावस्यायां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जयमाला

(विष्णु)

बार-बार नर जीवन पा के, व्यर्थ गवाँ डाले।
हे प्राणी! अब महावीर के, कुछ तो गुण गाले॥
भाव भक्ति से गद्गद् होकर, प्रभु से नेह लगा।
प्रभु-कृपा से रत्नत्रय से, अपनी देह सजा॥1॥

जन्म समय अभिषेक हुआ तो, शंकित इंद्र हुआ।
नन्हा सा बालक जलधारा, कैसे सहे मुआ॥
वीर! ज्ञान से जान मेरु को, दबा दिये थोड़े।
रखा इंद्र ने 'वीर' नाम तब, पूजन की दौड़े॥2॥

जब से त्रिशला माता के तुम, वसे गर्भ आके।
हुआ सदा सम्पन्न तभी से, राज्य तुम्हें पाके॥
दिन दुगुणी वा रात चौ गुणी, वर्द्धित प्रजा हुयी।
नाम आपका 'वर्द्धमान' तब, रखकर खुशी हुयी॥3॥

दो मुनि चारण ऋद्धि-धारी, जिज्ञासा लाये।
तत्त्व ज्ञान का समाधान बस, तुम्हें देख पाये॥
और खुशी से नाम आपका, 'सन्मति' रख डाले।
धन्य! धन्य! हे त्रिशला नंदन! सबके रखवाले॥4॥

खेल-खेल में चढ़े वृक्ष पर, जब सन्मति प्यारे।
संगम देव साँप बनकर तब, सबको फुसकारे॥

सब साथी तो डर भागे पर, वीर चढ़े सिर पर।
'महावीर' तब नाम देव ने, रखा प्रशंसा कर॥5॥

हुआ एक उत्पाती हाथी, वश में नहीं रहा।
इसे वीर! वश करने निकले, माना नहीं कहा॥
देख वीर को नतमस्तक गज, सूँड उठा डाला।
तभी नाम 'अतिवीर' आपका, जग ने रख डाला॥6॥

पाँच-पाँच नामों के धारी, शासननायक हो।
जय हो! जय हो! नाथ आपकी, सबके पालक हो॥
पंचम गति का हमें लाभ हो, ऐसी करो कृपा।
हमें क्षमा कर अपना लो अब, मन की हरो व्यथा॥7॥

बस इतना आशीष हमें दो, हम भी वीर बनें।
वर्द्धमान बन महावीर बन, सन्मति रूप सनें॥
बन अतिवीर करें मन वश में, नशे रात काली।
अपने भी हों दिवस दशहरा, रातें दीवाली॥

(दोहा)

भक्ति सहित हमने किया, पूजन वा गुणगान।
अपनी भी जयमाल हो, महावीर भगवान्॥

जय महावीर-जय महावीर

शासननायक-जय महावीर

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं.....।

(दोहा)

महावीर स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा....)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, महावीर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं.....)

विधान अर्घ्यावली

(ज्ञानोदय) (चार संज्ञायें)

भोजन संज्ञा के वश होकर, भक्ष्य अभक्ष्य सभी खाते।
व्यथा कथा के चक्कर में हम, ज्ञानामृत ना चख पाते॥
भूख प्यास का पाप हरें हम, यों ज्ञानामृत दान करो।
वीर! हमारी अर्जी सुनकर, भोजन संज्ञा हान करो॥ 1॥

ॐ ह्रीं पापमूल आहारसंज्ञाविनाशनसमर्थ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सात भयों से डरकर हम सब, डर-डर कर आधे जीते।
डर-डर कर ही आधे मरते, जहर गुलामी का पीते॥
सात भयों के शूल हरें हम, सुख का राज्य प्रदान करो।
वीर! हमारी अर्जी सुनकर, भय संज्ञा का हान करो॥ 2॥

ॐ ह्रीं परतंत्रतामूल भयसंज्ञाविनाशनसमर्थ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

मैथुन संज्ञा से जल करके, दुख सहते अपयश पाते।
आतम बगिया जले, खिले ना, ब्रह्मचर्य का यश पाते॥
मैथुन का संताप हरें हम, संयम पथ वरदान करो।
वीर! हमारी अर्जी सुनकर, मैथुन संज्ञा हान करो॥ 3॥

ॐ ह्रीं परेशानीमूल मैथुनसंज्ञाविनाशनसमर्थ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

परिग्रह संज्ञा-साँप डसे तो, पापों का फिर खेल हुआ।
राजा-रंक बने यह दुनियाँ, वध-बंधन का जेल हुआ॥
साँप परिग्रह का विष उतरे, गरुड़ मंत्र यों दान करो।
वीर! हमारी अर्जी सुनकर, परिग्रह संज्ञा हान करो॥ 4॥

ॐ ह्रीं पञ्चपरिवर्तनमूल परिग्रहसंज्ञाविनाशनसमर्थ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

(षट्-लेश्या)

वैर तजे ना क्रोधी लंपट, दया धर्म से मुकर रहा।
क्रूर दोगला झगड़ालू जो, पेड़ जड़ो-मय कुतर रहा॥
भाव कृष्ण लेश्या काली ये, नीच नरक गति पहुँचाये।
हमें नरक गति ना जाना सो, शरण वीर की हम आये॥ 5॥

ॐ ह्रीं कृष्णलेश्यासम्बन्धी दुर्भावविनाशनसमर्थ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

चुगलखोर अति सोने वाला, संज्ञाओं का लोलुप जो।
अति लोभी जो तना तोड़ के, फल खाने का इच्छुक हो॥
भाव नील लेश्या नीली ये, मध्य नरक गति पहुँचाये।
हमें नरक गति ना जाना सो, शरण वीर की हम आये॥ 6॥

ॐ ह्रीं नीललेश्यासम्बन्धी दुर्भावविनाशनसमर्थ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

क्रोध जलन अपमान अन्य का, निंदक ना विश्वास करे।
निजी प्रशंसक को धन देता, शाखा बड़ी विनाश करे॥
रंग कबूतर सी कापोती, उपरिम नरकों ले जाए।
हमें नरक गति ना जाना सो, शरण वीर की हम आये॥ 7॥

ॐ ह्रीं कापोतलेश्यासम्बन्धी दुर्भावविनाशनसमर्थ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

दया दान में रत मृदुभाषी, कार्य हिता-हित पथ जाने।
दृढ़ताधारी उपशाखा को, तोड़े फल खा सुख माने॥
भाव पीत लेश्या पीली ये, निम्न सुरों में पहुँचाये।
हमें प्राप्त हो पंचम गति सो, शरण वीर की हम आये॥ 8॥

ॐ ह्रीं पीतलेश्यासम्बन्धी भावप्राप्तये श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

क्षमा शील सच्चा त्यागी जो, साधुजनों का पूजक हो।
भद्र श्रेष्ठ कार्यों का कर्त्ता, तोड़ फलों का भक्षक हो॥
भाव पद्म लेश्या नारंगी, मध्य सुरों में पहुँचाये।
हमें प्राप्त हो पंचम गति सो, शरण वीर की हम आये॥ 9॥

ॐ ह्रीं पद्मलेश्यासम्बन्धी भावप्राप्तये श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पक्षपात अघ राग-द्वेष का, नेह निदानों का त्यागी।
दोष न देखे शिवप्रेमी जो, गिरे फलों का अनुरागी॥
भाव शुक्ल लेश्या उज्ज्वल जो, उच्च सुरों में पहुँचाये।
हमें प्राप्त हो पंचमगति सो, शरण वीर की हम आये॥ 10॥

ॐ ह्रीं शुक्ललेश्यासम्बन्धी भावप्राप्तये श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

(चौदह गुणस्थान)

मोह योग के निमित्त से जो, आतम के परिणाम गुनो।
गुणस्थान वे चौदह उनमें, पहला है मिथ्यात्व सुनो॥
जो मिथ्यात्व कर्म उदयों से, तत्त्वों में श्रद्धान नहीं।
देव-शास्त्र-गुरु को ना माने, अपने-पर का भान नहीं॥

(दोहा)

मिथ्या दुख का मूल है, जैसे चुभे बबूल।
वीर! हमारा दुख हरो, दो श्रद्धा का फूल॥ 11॥

ॐ ह्रीं समस्तविधदु:खदरिद्रता मिथ्यात्वभावविनाशनाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पहले या दूजे उपशम के, उच्च शिखर से गिरकर के।
जब तक ना मिथ्या तल पाते, तीव्र कषायोदय धर के॥
वो सासादन सम्यग्दर्शन, उपशम समदृष्टी पाते।
सब भव्यों को इसका पाना, नहीं जरूरी गुरु गाते॥
सासादन मिथ्यात्व को, करिए दूर जरूर।
वीर! हमारी अर्ज को, शीघ्र करो मंजूर॥ 12॥

ॐ ह्रीं समस्तविधपतनदायक सासादनसम्यक्त्वभावविनाशनाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।

यथा स्वाद खिचड़ी का अथवा, मिले दही गुड़ का होता।
त्यों मिथ्या वा सम्यग्दर्शन, मिलकर तत्त्व विषय खोता॥
यह सम्यक् -मिथ्यात्व नाम का, गुणस्थान या मिश्र कहा।
मरण न इसमें आयु बंध ना, यहाँ न संयम पले कदा॥
मिश्रभाव स्वामी हरो, शुद्ध भाव दो दान।
वीर! हमारी प्रार्थना, स्वीकारो भगवान्॥ 13॥

ॐ ह्रीं समस्तविधमिश्रदशादायक सम्यग्मिथ्यात्वभावविनाशनाय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

देव-शास्त्र-गुरुओं पर श्रद्धा, तत्त्व विषय श्रद्धान जहाँ।
सुनो! क्षयोपशम उपशम क्षायिक, तीनों हैं श्रद्धान जहाँ॥

पर व्रत संयम वहाँ न होते, अविरत सम्यग्दर्शन वो।
गुणस्थान चौथा बतलाया, चौ-गति में हो भव्यन को॥
रत्नत्रय की नींव है, मोक्षमहल सोपान।
वीर! हमें वह दीजिए, सम्यग्दर्शन यान॥ 14॥

ॐ ह्रीं समस्तविधश्रद्धादोषनाशकसमर्थ सम्यग्दर्शनप्राप्तये श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो श्रावक त्रस हिंसा तजते, तो संयम स्वीकार रहे।
तज न सकें पर थावर हिंसा, तभी असंयम धार रहे॥
नर पशु गति में साथ-साथ में, ऐलक क्षुल्लक आर्याजी।
गुणस्थान वह देशविरत या, धरें संयमा-संयम भी॥
देशविरत से पाइए, सोलह सुर तक धाम।
वीर! भक्ति से वह मिले, बाद मिले शिव धाम॥ 15॥

ॐ ह्रीं गुणधनमण्डित देशविरतदायक श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

प्राणी संयम इंद्री संयम, जहाँ रहे पापों पर जय।
वहाँ सकल संयम हो लेकिन, नहीं संज्वलन मंद उदय॥
तभी प्रमाद कहा मुनियों को, गुणस्थान वह छठा कहा।
प्रमत्त विरत उसी को कहते, प्रज्ञा का अपराध रहा॥
परमेष्ठी का रूप है, मुक्ति रमा का हार।
वीर! वही मुनि रूप दो, यथाजात सुख द्वार॥ 16॥

ॐ ह्रीं समस्तविधभ्रान्ति क्लांतिनाशक प्रमत्तविरतरूपपरिणामप्राप्तये श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जहाँ संज्वलन कषाय का भी, मंद उदय का पड़ जाना।
प्रमाद का तब लेश न रहता, वही अप्रमत्त गुणमाना॥
भेद सातिशय स्वस्थानमय, क्रिया ध्यान वाला रहता।
गुणस्थान वह सप्तम माना, ऐसा जिन आगम कहता॥
गुणस्थान सप्तम मिले, क्रिया ध्यान का कोश।
वीर! वही मुनि रूप दो, सावधान संतोष॥ 17॥

ॐ ह्रीं समस्तविधप्रमादनाशक अप्रमत्तविरतरूपशुद्धपरिणामप्राप्तये श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

भिन्न समयवर्ती जीवों के, जहाँ भिन्न परिणाम रहे।
किन्तु समयवर्ती जीवों के, भिन्न अभिन्न सुकाम रहे॥
मिले न पहले भाव अपूरब - भाव अपूरब यथा धरे।
गुणस्थान वो अपूर्वकरण जो, उपशम क्षायिक व्यथा हरे॥
गुणस्थान अष्टम मिले, क्षायिक वाला धाम।
वीर! वही मुनिरूप दो, जिसको सदा प्रणाम॥ 18॥

ॐ ह्रीं समस्तविधभूतदोषनाशक अपूर्वकरणरूपशुद्धपरिणामप्राप्तये श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

भिन्न समयवर्ती जीवों के, भिन्न-भिन्न परिणाम जहाँ।
एक समयवर्ती जीवों के, समान ही परिणाम यहाँ॥
आगे-आगे नंत गुणी जो, बढ़े विशुद्धि करणों की।
गुणस्थान वह नौवाँ होता, हो पूजा मुनि चरणों की॥
गुणस्थान नौवाँ मिले, क्षायिक वाला योग।
वीर! वही मुनिरूप दो, शुद्ध करो संयोग॥ 19॥

ॐ ह्रीं अशुद्धिदोषनाशक अनिवृत्तिकरणरूपशुद्धपरिणामप्राप्तये श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

उदय जहाँ संज्वलन लोभ का, बहुत-बहुत अतिसूक्ष्म हुआ।
वहाँ संत के परिणामों से, छोटा दुख का कूप हुआ॥
क्षायिक या उपशम वाला जो, नाश कषायों को करता।
गुणस्थान वो दसवाँ जानो, जो आतम में सुख भरता॥
गुणस्थान दसवाँ मिले, क्षायिक वाला भाव।
वीर! वही मुनि रूप दो, जो नाशे दुर्भाव॥ 20॥

ॐ ह्रीं लघुताभावनाशक सूक्ष्मसाम्परायरूपशुद्धपरिणाम प्राप्तये श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

चरितमोह के जहाँ कर्म सब, उपशम हो अथवा दबते।
यथाख्यात चारित्र वहाँ पर, होता यह जिनवर कहते॥

पतन यहाँ से निश्चित होता, उपशम श्रेणी अंत यहाँ।
गुणस्थान उपशांत मोह वह, टिक न सकता संत जहाँ॥
गुणस्थान उपशांत जो, उपशम करे कषाय।
वीर! उसी मुनिरूप को, माथा जगत् नवाय॥ 21॥

ॐ ह्रीं उपद्रवभावनाशक उपशान्तरूपविशुद्धपरिणामप्राप्तये श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

चरितमोह का जहाँ कर्म फल, पूरा क्षय अत्यन्त हुआ।
वहाँ शुद्ध निर्मल अविनाशी, यथाख्यात चारित्र हुआ॥
फटिकमणी सम भाव वहाँ पर, अंत क्षपकश्रेणी का हो।
क्षीणमोह या बारहवाँ वह, गुणस्थान आतम का हो॥
गुणस्थान जो बारवाँ, क्षीणमोह विख्यात।
वीर! वही मुनिरूप दो, जो प्रभु रूप दिलात॥ 22॥

ॐ ह्रीं समस्तविधमूर्च्छानाशक क्षीणमोहरूपविशुद्धपरिणामप्राप्तये श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सकल घातिया नशे जहाँ पर, नन्त चतुष्टय प्रकट हुए।
वह अरिहन्त दशा जग पूजित, भाव सयोगी घटित हुए॥
यही केवली प्रभु के हो जो, मोक्षमार्ग दे भव्यों को।
सयोगकेवली गुणस्थान या, तेरहवाँ हो पूज्यों को॥
गुणस्थान जो तेरवाँ, सयोगकेवली भूप।
वीर! वही मुनिरूप दो, जो अरिहन्त स्वरूप॥ 23॥

ॐ ह्रीं दुःखसंयोगविनाशकसमर्थ सयोगकेवलिरूपविशुद्धपरिणामप्राप्तये श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जब अरिहन्त प्रभु के तीनों, योग नशे पर देह रहे।
पाँच लघु स्वर के वाचन के, समय मात्र भव गेह रहे॥
केवलज्ञान सहित भावों मय, जो अरिहंत जिनेश्वर जी।
अयोगकेवली गुणस्थान या, चौदहवाँ पूजें सुर भी॥
गुणस्थान जो चौदवाँ, अयोगकेवली सार।
वीर! वही मुनिरूप दो, जो सिद्धों का द्वार॥ 24॥

ॐ ह्रीं संसारचक्रविनाशकसमर्थ अयोगकेवलिरूपविशुद्धपरिणामप्राप्तये श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य

इस दुनियाँ में कोई न अपना, किससे अपनी बात कहें।
कहाँ रहें किसको अपनायें, किसको अपने साथ रखें॥
यही सोच हम द्वार आपके, विनय भक्ति से आए हैं।
हमको बस अपना लो स्वामी, अर्घ्य भावमय लाये हैं।
स्वयं सिद्ध प्रभु वीर हो, करो सिद्ध हर काम।
मुक्ति वरण को हम करें, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं शासननायक श्रीमहावीरजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

वर्द्धमान सार्थक रहा, विश्व विजेता नाम।
वर्द्धित गुण पाने करें, बारम्बार प्रणाम॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! महावीर की, जय हो! जय हो! सन्मति की।
वर्द्धमान अतिवीर वीर की, जय हो! जय हो! जगपति की॥
पथ पाथेय तुम्हीं हो स्वामी, पथ दर्शक हो पथ ज्योति।
तुम्हीं रतन चिंतामणि साँचे, तुम ही हो हीरा-मोती॥ 1॥

तुम्हीं कहाते त्रिशला नन्दन, सिद्धारथ के सुत प्यारे।
बने भील से भगवन् तुम ही, भक्तों की नैया तारे॥
राग त्याग वैराग्य धार के, किये साधना कल्याणी।
भक्त वही भव पार पहुँचते, जो अपनाते तव-वाणी॥ 2॥

लेकिन हम तो तुम्हें भूल के, भवसागर में डूब रहे।
राग-द्वेष अज्ञान मोह से, पापों से ना ऊब रहे॥
नफरत ईर्ष्या तृष्णा माया, बस इनमें ही उलझ रहे।
अपना वैभव भूल इन्हीं को, सर्व हितैषी समझ रहे॥ 3॥

तभी ताकते रहते नयना, बुरे-बुरे गुण औरों के।
कान हमारे कभी न थकते, सुन-सुन अवगुण गैरों के॥
पाँव हमारे उल्टे पड़ते, बुरे काम ही हाथ करें।
हृदय शीश तन मन वचनों से, बुरी-बुरी हम बात करें॥ 4॥

अतः विश्व बन गया नरक सा, मौसम के तेवर बदले।
दोष किसे हम दें हम ही तो, हंस बने कपटी बगुले॥
बस इससे ही सुंदर जीवन, भरा बुराई से अपना।
अब कैसे साकार यहाँ हो, बतलाओ सुख का सपना॥ 5॥

अतः विश्व को रही जरूरत, महावीर की सदा-सदा।
लेकिन आप नहीं आओगे, भक्तों की सुन व्यथा-कथा॥
तभी आपकी पूजा अर्चा, करने की हमने ठानी।
भाव यही है हम सब पायें, छाँव आप की वरदानी॥ 6॥

गर तस्वीर वसे नयनों में, तो तकदीर बदल जायें।
अगर आप मन में आओ तो, महावीर हम बन जायें॥
कान हमारे धन्य बनें जब, महावीर की कथा सुनें।
हाथ पैर सिर पावन हों जब, महावीर की राह चुनें॥ 7॥

महावीर का रूप धरें हम, महावीर की जय बोलें।
रोज दशहरा मने दिवाली, मोक्ष महल के पट खोलें॥
भक्त भक्ति को अमर बना दो, श्रद्धालय में आकर के।
'सुव्रत' का संसार बदल दो, सिद्धालय दिलवा कर के॥8॥

(दोहा)

महावीर का नाम ही, करे विश्व कल्याण।
जीवन का निर्माण कर, करवाता निर्वाण॥

जय महावीर-जय महावीर

शाससननायक-जय महावीर

ॐ ह्रीं शाससननायक श्रीमहावीरजिनेन्द्राय समुच्चयजयमालापूर्णार्घ्यं.....।

(दोहा)

महावीर स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा....)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, महावीर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं....)

॥ इति श्री महावीरविधान सम्पूर्णम्॥

समुच्चय जाप्यमंत्र

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री वृषभादिवीरपर्यन्तचतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो नमो नमः।

प्रशस्ति

विद्या गुरु आशीष में, पद्मसिंधु मुनि मीत।
'मुनिसुव्रतसागर' लिखे, महावीर के गीत॥
प्यारी पन्द्रह जनवरी, दिवस रहा शनिवार।
दो हजार ग्यारह रहा, मिले मोक्ष का द्वार॥
नगर ललितपुर में हुआ, गजरथ बड़ा महान्।
झण्डारोहण के दिवस, पूरा हुआ विधान॥
भक्ति शक्ति से जो करें, होकर भाव-विभोर।
महावीर बन वो चलें, मोक्ष महल की ओर॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

(लय : मेरा आपकी कृपा से....)

वीरा आपको नमन कर, तकदीर हम सँवारें।
हम आरती उतारें, प्रभु! आप भक्त तारें॥

सिद्धार्थ के कुँवर तुम, त्रिसला के हो सितारे।
कल्याण जग का करने, जिन रूप में पधारे।
हमको भी दो सहारा[2], हम भक्ति कर पुकारें॥ 1॥

संसार के हितैषी, रसिया हो आतमा के।
तीरथ हो चलते-फिरते, वसिया चिदात्मा के।
मन में हमारे आओ[2], अखियाँ तुम्हें निहारें॥ 2॥

घी दीप बाती ज्योति, तेरे द्वार पर जलायी।
भक्ति के रँग में रँग के, दुनियाँ दीवानी आयी।
अंतर की ज्योति देना[2], बाहर की हम उजारें॥ 3॥

हम हैं अधूरे तुम बिन, पूरा हमें बना दो।
सुर गीत ताल दे के, 'सुव्रत' का सुर सजा दो।
दे गीत आत्मा का[2], दो मोक्ष की बहारें॥ 4॥